पत्थरों के बीच की गुजरता बचपन

मेरा नाम पिन्टू{बदला हुआ नाम}है। मेरी उम्र 16 वर्ष है। मै मीरजापुर, उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूॅ। मेरे पित का नाम रामचेत और माता का नाम शकुन्तला देवी है। हमलोग 2 भाई और 2 बहने है। मै घर मे छोटा हूॅ। मेरे पिता जी 15 से 20 सालो से पहाड़ो में पत्थर तोड़ने और ढ़ोने का कार्य करते है।

मेरे परिवार में पिता जी ही कमाने वाले है। उन्ही के मजदूरी से घर का गुजारा होता है। लेकिन पिता जी की तबीयत ठीक न रहने के कारण घर की आर्थिक स्थिति और खराब होने लगे। जिस कारण हम कक्षा 8 के आगे की पढाई नही कर पाये और हम भी पहाड़ो के बीच कूद गये काम करने। मै भी 2 सालो से पहाड़ो में गाड़ियों पर गिट्टी फैलाने का कार्य करता हूॅ। मै सुबह जाता हू और शाम को घर आता हूॅ दिन भर वही रहता हूॅ। दिन में एक गाड़ी का 70 रूपये मिलता है दिन भर में 5 गाड़ी पर गिट्टी फैलाने कार्य कर लेते है। पहाड़ो में बहुत जोखिम रहता है। वहॉ ब्लास्गिं होती है जिससे एक डर बना रहता है कि कही टुकड़े छटक कर उपर ना आ जाये। पत्थरों का धूल और गरदा तो इतना उड़ता है कि बीमार होना तय है लेकिन मजबूरी है कि कार्य करना पड़ता है। कई लोगो को इसके कारण टी0बी0 की बीमारी हो गई और उनकी मृत्यु भी हो गई। चोट भी लग जाती है।

स्कूल जब मै जाता था तब समय खाना–पिना, खेलना और दोस्तो के साथ घूमना हो जाता था लेकिन जब कार्य कर रहा हूॅ तब से खाना खाने का कोई समय नही रहता है। क्योकि जब गाड़ी आ जायेगी तब मुझे जाना पड़ जाता है। पढ़ार्द छूट गयी, खेलने का तो मौका ही नही मिलता है। अब तो सिर्फ काम ही काम करना पड़ता है। काम करने से मेरे हाथ में घट्ठे पड़ गये है, हाथ और कमर दर्द करता है। जिससे मै भी बिमार पड़ जाता हूॅ। लेकिन ये रहता है कमाना है और परिवार को चलाना है इस लिए कार्य करते रहते है।

यह क्षेत्र पहाड़ो का है। यह पर आसानी से पहाड़ों में कार्य मिल जाते है और कोई दूसरा कार्य भी नही मिल पाता है। हम चाहते है कि हमको गाड़ी चलाना आ जाये तो वही कार्य करेगें ताकि इस काम से पिछा छूट जाये। इस एरिया में 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों बहुत कार्य करते है लेकिन उनकी भी मजबूरी है इसलिए कार्य करना पड़ता है। हम चाहते है कि–सरकार हमारे परिवार को सभी सरकारी सुविधाये दे जिससे हमलोगो को कार्य न करना, पत्थर खदान मे क्रेसर प्लांट लग जाने के कारण बहुत शोर होता है जिससे रहना, सोना और पढ़ना बहुत मुश्किल हो गया है। इसको बंद कराया जाय। बच्चो को पढ़ने के लिए निःशुल्क किताबें तथा अच्छी शिक्षा मिल सके।